सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | सितम्बर-अक्तूबर, 2015

विश्राम के लिए

यीशु के पास आना

आजकल लोगों का जीवन इतना उलझ गया है कि वे आसान उपाय को तुच्छ समझते है। आदमी की समस्याएं, उनके दिलों को कुतरकर खाते जाते है जब तक वो या तो अचानक बीमार हो जाते हैं या फिर मौत का शिकार हो जाते है। बहुत पढ़े-लिखे आदमियों ने भी अपनी भावनओं और वासनाओं पर काबू पाना नहीं सीखा है। उनमें उनकी समझ भ्रष्ट करके वे अपने परिवारों को भी तबाह कर रहें है। क्या परमेश्वर के पास हमारे समस्याओं का हल है? या फिर वे सिर्फ एक भावुक प्रतीक हैं। एक तस्वीर है जो दिवार पर लटकाए जाने के लिए है। जीवित परमेश्वर ने हम से साफ-साफ कहा है : (मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।) यह आप के लिए और मेरे लिए एक वरदान है। या तो यह वरदान सच है, या फिर बोला गया एक सब से बड़ा झूठ है। मगर हम सावधान हो जाएं। क्योंकि इन

विश्राम के लिए.. पृष्ठ 3 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर ***रविवार सुबह 7:30 से 8:00*** *बजे*

परमेश्वर के विचार - हमारा मार्ग दर्शन

'तू ने मुझे आगे-पीछे घेर रखा है , और अपना हाथ मुझ पर रखा है। यह ज्ञान तो मेरे लिए अत्यन्त अद्भुत है ; यह बहुत गम्भीर और मेरी समझ से परे है। ' (भजन संहिता 139:5,6)

परमेश्वर हमारे आगे और पीछे कैसे हो सकते हैं ? उन्होंने अपने विचारों को हमारे आगे और पीछे रखा है। स्वर्ग को किसने तैयार किया ? वह परमेश्वर का विचार था। वह पूरी तरह से परमेश्वर के विचारों के नियंत्रण और शासन के अधीन है। स्वर्ग में आप , परमेश्वर के विचारों को कार्रवाई में देखेंगे। परमेश्वर ने अदन वाटिका को एक छोटे स्वर्ग जैसा बनाया। वहाँ सिर्फ परमेश्वर आकर उन दम्पति (आदम और हव्वा) में अपना विचार बो रहे थे। वहाँ वे बहुत सुरक्षित थे। और स्वर्ग का माहोल वहाँ था। उनके मन परमेश्वर के विचारों से भरे जा रहे थे। वहाँ एक और आया। वह अपने विचारों को , उन में बोने लगा और परमेश्वर के विचारों के प्रति संदेह उत्पन्न करने लगा। आप को सावधान रहना होगा कि आप किससे बातें कर रहे हो और किस के साथ नाता रख रहे हो। हो सकता है कि वे आप में विषैले विचारे बोये। आपके सारे विचार परमेश्वर द्वारा परखे जाने चाहिए। मेरी व्यक्तिगत प्रार्थना के दौरान परमेश्वर मेरे विचारों को फटकाते थे। और जो विचार परमेश्वर के नहीं होते थे, वे उनको निकालते थे। ठीक उस समय कुछ विचार मुझ में गहराई से बैठ रहे थे। उन दिनों गहराई से प्रार्थना करने का अवसर और स्थान मुझे मिला। तब परमेश्वर को मौका मिला कि वह मुझे दिखाये कि मेरे विचार गलत विचार हैं। अगर ऐसा ना होता तो मैं बरबाद हो जाता। शैतान ने मुझ में अनेक विचार बोये जो परमेश्वर के विचारों जैसे दिखते थे। तब परमेश्वर ने मुझे आगाह किया : 'उन्हें निकालो, वे मुझ से आये विचार नहीं है।' मैं ने छुटकारा पाया।

नरक क्या है ? जब शैतान के विचार हम में स्थापित हो जाते है तब हम नरक में है। और नरक की भावनायें हम में राज करेंगीं। उसी तरह आदम को भी धोखा दिया गया था। शैतान के विचार हव्वा में बैठ गये और उसने उनके अनुसार काम किया। गलत विचार आप में आ सकते है। मगर जब आप उनके हिसाब से कार्यवाही करते हो , तो ठोस नरक आप में प्रवेश करेगा। जहाँ भी आप जाओ , वहाँ उन विचारों को आप बोना शुरू करोगे। और आप दूसरों के लिए खतरा बन जाओगे। हव्वा वैसी ही थी। उसने जाकर आदम को बहकाया। शैतान की सलाह के मामले

में वे परमेश्वर का मशवरा लेने के लिए शाम तक इन्तजार कर सकते थे। जब शैतान लोगों में अपना विचार डालता है, वह उन्हें जल्दबाजी करने के लिए उकसाता है, ताकि वे हमेशा के लिए बरबाद हो जाये। शादी के मामले में शैतान बुहत से लोगों को धोखा देने का प्रयास करता है। उनको जल्दबाजी करने के लिए उकसाता है और उस विषय को लेकर , उन्हें छिपे तरीके से व्यवहार करने पर मजबूर करता है। वह चाहता है कि वे जिन्दगी भर के लिए गलत व्यक्ति से बन्ध जाएँ। जल्दबाजी करने की क्या जरूरत है ? परमेश्वर ने उसे आगे और पीछे घेर रखा है। परमेश्वर बुद्धिमान है।

'हे परमेश्वर , मेरे लिए तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं ! उनकी संख्या का जोड़ कैसा महान है !?' (17वाँ वचन) कौन अपने जीवन में महान सफलता पायेगा? वो व्यक्ति जिस में परमेश्वर के विचार सुस्थिर किये गये हों और जो उनके अनुसार काम करता हो। यीशु हमेशा परमेश्वर के विचारों के अनुसार ही , काम करते थे। पौलूस (पहली सदी का प्रेरित) ने परमेश्वर की इच्छा का पूरा किया था। रात को प्रभु ने दर्शन के द्वारा पौलूस से कहा , 'मत डर। प्रचार करता जा और चुप न रह। ' (प्रेरितों के काम 18 :9) जब उनको यूरोप जाना था , तब मैसिडोनिया के एक आदमी ने आकर उससे बातें कीं। एक दफा, एक नबी ने उसका कमरबन्ध लिया, अपने हाथों को बांध कर , कहा कि पौलूस को इस तरह बान्ध दिया जायेगा। पौलूस ने कहा कि वह मौत से भी नहीं डरता। परमेश्वर के विचार यह थे कि वह यरूशलेम जाये और वह किसी भी कीमत पर वहाँ जायेगा। एक वक्त यहाँ एक नौजवान था। उसे प्रचार करने के लिए मैं ने प्रोत्साहन किया था। एक जगह उनको बार बार आने का न्यौता मिल रहा था। मैं ने सोचा कि इस में कुछ अजीब बात है। वह लड़का परमेश्वर की इच्छा को खास एहमियत नहीं देता था। जल्द ही वह आदमी जो उसे न्यौता देता रहा , अपनी बेटी से उसकी शादी करावा दी। ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर की सेवा को तरह-तरह के इरादों से करते है - स्वार्थी इरादें। परमेश्वर के राज्य में उन्हें दिलचस्प नहीं है। अनके लोग , परमेश्वर का भय माननेवाले नौजवानों को स्वार्थी इरादों से देखते है। और उनमें गलत विचारों को बोते है। कभी कभी मिशनरी भी अच्छे अवसरों को सांसारिक तौर पर पेश करते है। नौजवानों को परमेश्वर के लिए कैसे संरक्षित रखा जाए ? पवित्र आत्मा परमेश्वर, परमेश्वर के विचारों को आपके दिल में बो रहे है , और अपने विचारों के जीवन का निर्माण कर रहे है।

मेरे रिश्तेदारों के मन में मेरे लिए परमेश्वर के विचार नहीं थे। सिर्फ मेरे पिताजी मुझे सलाह नहीं देते थे , क्योंकि मैं परमेश्वर की इच्छा पर चल रहा था। अपने मन की सोच के भण्डार के विषय में सावधान रहो। 'हे परमेश्वर , मुझे जांचकर मेरे हृदय को जान ले ' क्या मेरे सारे विचार, परमेश्वर के विचार है ? क्या मैं किसी संसारी लाभ का इरादा रखता हूँ? अगर आप इस तरह सावधान रहते हो, तो आपकी प्रार्थना में स्वर्ग तक पहुँच ने की शक्ति रहेगी।

नहेमायाह (ईसा पूर्व पांचवी सदी का यहूदी) एक दफा उनको बेबिलोन वापस जाना पड़ा। (जहाँ यहूदी बन्धुआई में थे।) ताकि वह अपनी छुट्टी को आगे बढ़ाये। उनकी अनुपस्थिति में एक याजक ने अपने बेटे का विवाह तोबिय्याह की बेटी से किया था। (तोबिय्याह एक शत्रु अम्मोनी था।) देवालय में एक कक्ष जहाँ पहले लोबान (धूप चढ़ाने का सामान) और अन्य पवित्र वस्तुएँ रखीं जाती थीं, साफ करके तोबिय्याह को दिया गया था। नहेमायाह बेबिलोन से वापस लौटा और मंदिर का अपवित्र किया जाना देखा। और नहेमायाह ने तोबिय्याह का सारा सामान उस कमरे से बाहर फेंक दिया। तोबिय्याह के पुत्र और अन्य जो गैरयहूदियों से शादी किया था , उन सब को भगाया। सब्बात का दिन , व्यापार बन्द करने के लिए नहेमायाह ने फाटक बन्द करवाया। सोर और सीदोन के कुछ व्यापारी शहरपनाह के बगल में , फाटक खोले जाने का इन्तजार कर पड़ाव डाले थे। नहेमायाह ने उसे भी बन्द करवाया। आज्ञा ना मानने के विषय में भी लोगों को डाँटकर चिताया। अपने विचारों के विषय में सावधान रहो। नहेमायाह ने तोबिय्याह का सारा सामान बाहर फेंक दिया; शैतान के विचारों को हम बाहर फेंक दे। परमेश्वर के विचार हमारे आगे और पीछे उपस्थित रहें।

- एन. दानिएल।

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

विश्राम के लिए... पृष्ठ 1 से

शब्दों को जिसने कहा है , वह प्रभु यीशु, वही एक मात्र जो छाया के समान बदलने वाले नहीं है। यीशु के बारे में बाइबल कहता है , 'उसने न तो कोई पाप किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली।' (1 पतरस 2 :22) तो वह यही है; रक्षक, पाप रहित एक मात्र। निमंत्रण और प्रतिज्ञा के इन शब्दों को कहने वाला: 'हे सब थके और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ : मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।' (मत्ती 11:28)

मेरे अपने व्यक्तिगत अनुभव में, मैं ने ऐसे , हजारों - हजार लोगों को देखा है और उनसे मिला हूँ; जिन्होंने प्रभु यीशु के इन शब्दों को परखा है और उन्हें सच पाया है। जब ऐसा लगने लगा है कि सब कुछ खो चुके हैं , जब उनकी छोटी सी दुनिया टुकड़ों में बिखर गई है , जब वे जानते थे कि उनके लिए कोई आशा नहीं बची है, तब वे यीशु के पास गये। और उन लोगों ने यीशु को सच पाया और यीशु ने उनको विश्राम दिया। ऐसे कई आदमी और औरतें , नौजवान और वृद्ध है जिन्होंने यीशु में शान्ति , विश्राम और क्षमा पाई है। इनके बीच में ऐसे लोग थे , जिनको चाहने वाले अपनों ने भी उन्हें असुधार्य और गुमराह जिन्हें पुन : पाना असाध्य समझ कर छोड़ दिया है। और ऐसे लोग भी थे जो खुदकुशी करने के कगार पर थे।

पाप और अपराध के भारी बोझ ने नीचे दबे पीड़ित लोग , मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। यह बुलावा सब लोगों के लिए है, जो उदास है , बार बार झटके लगने से हिल गये है, घबराहट से शक्तिहीन, शरीर और मन में कमजोर लोग और जो निराशा में है। 'मेरे पास आओ,' उद्धारकर्ता आपको बुला रहें है।

एक दफा एक कॉलेज में पढ़ रहे एक विद्यार्थी ने मुझे चिट्ठी में लिखा ; 'हो सकने वाले हर एक पाप को मैं ने किया है, क्या मेरे लिए कोई आशा है ?' वह विकृत यौन कृत्यों में लिप्त था , जिस से कि वह कमजोर और व्याकुल बन गया था। यह समझकर कि वह बहुत दूर भटक चुका है, वो निराशा में था। मैं ने जवाब में लिखा , 'हाँ, जब तुम पश्चाताप करोगे, तुम्हारे लिए आशा है, ।' प्रभु यीशु ने उस लड़के को छूआ। शान्ति और पापों की माफी उसे दी।

मैं अचम्भा करने लगा हूँ कि क्या कुछ लोग वास्तव ही गंभीर रूप से , हर तरह के स्थानों की पुण्य यात्रा के लिए निकल पड़ते हैं। कुछ लोग क्रिसमस मनाने बैतलेहेम जाते हैं। एक स्थान , चाहे जितना भी वह पवित्र हो , आपके आत्मा की गहरी जरूरत को वह पूरा नहीं कर पायेगा। वह 'एक व्यक्ति ' है , जिसकी आपको जरूरत है - उद्धारकर्ता यीशु , जो 'मेरे पास आओ' कह कर आप को बुला रहे है।

लोगों को एक नुसख़ा चाहिए , एक वाक्य या जादुई दो शब्द जिससे की उनका काम चल जाये और आराम पहुँच जाये। या फिर वे एक तावीज़ , कोई स्मारक अवशेष या तिलिसमात माँगते है कि वे उनको गले में या फिर बाहों में पहने, जिस से की उनको सुरक्षा का एहसास हो। अपना संकट में वे महंगे चढ़ावा देने के लिए तैयार हो जाते है , ताकि वे किसी मिथक व्यक्ति या कोई स्वघोषित ईश्वरीय-आदमी का अनुग्रह पा सकें। वे एक चर्च में जुड़ जाने के लिए तैयार हो जाते है जैसाकि वे किसी क्लब में शामिल होते हैं , इस आशा से कि उनकी समस्याओं का हल उनको मिल जाये।

नहीं , मेरे दोस्त , आपको एक व्यक्ति, के पास जाना होगा। वो आपसे प्रेम करने वाला, ' मेरे पास आओ कहकर आपको न्योता देने वाले उस उद्धारकर्ता के पास आपको जाना होगा। कुछ समय पहले एक नौजवान से मुझे चिट्ठी मिली। लिखा था कि उसने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया और शादी करने कोई अच्छी लड़की मिल जाय, वह यह खोज रहा है। उसका शादी बिलकुल टूट चुकी थी। लगता है उसकी पत्नी के जीवन में यीशु के लिए कोई स्थान है ही नहीं। लगातार तनाव के कारण , दोनों ने मानसिक रूप से हानि का अनुभव किया है। मैं ने उसको लिखा 'नहीं, तुम्हारी पत्नी को वापस लाने में परमेश्वर में समर्थ है। प्रभु यीशु नहीं चाहते है कि जब पत्नी जिन्दा हो , तो कोई भी आदमी किसी दूसरी औरत से शादी करे। ऐसा काम व्यभिचार माना जायेगा। अपनी पत्नी के वापस लोटने के लिए दरवाजा खुला रखो।' उसने मेरी बातों पर गौर किया। उसने अपने आप को शुद्ध करना और अपने पापों से छुटकारा पाने का प्रयास करने शुरु किया। अंधकार शक्तियों से छुटकारा पाने और तबाह अपनी गृहस्थी को पुनः निमार्ण करना शुरू किया। प्रभु ने हमारी प्रार्थना सुन ली। इस हफ्ते उस नौजवान से यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई कि उसने अपनी तलाक शुदा पत्नी से दुबारा शादी कर लिया और अब वे दोनों साथ-साथ जी रहे है ! यह परिवार यूरोप के मध्य भाग में जी रहे है जहाँ विवाह का संबंध कमजोर हो गया है और शारीरिक वासनायें अत्यंत प्रबलता से राज कर रहे है। अब वे चाहते है कि मैं उनके क्षेत्र के कुछ कस्बों में जाकर प्रचार करूँ।

वह प्रभु यीशु ही हैं जिसने इस नौजवानों के घर को बसाया। यीशु को अपनी गृहस्थी का केन्द्र ना बनाकर वे मानसिक स्तर पर बरबाद हो चुके थे। प्रभु यीशु के शब्द , व्यर्थ शब्द नहीं है , 'मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। ' यह शब्द कितना सत्य है!

एक आदमी को आत्मा की गहराई में , कोई दूसरा आदमी विश्राम

नहीं दे सकता। उसके माता-पिता भी नहीं, बल्कि सिर्फ यीशु मसीह। वो गहरा, स्थिर विश्राम आपको देने का सामर्थ्य उन में है। आप के पापों को क्षमा करने का सामर्थ्य उन में है।

अनजाने में ही आप में दोषी होने का एहसास कायम है। क्षमा ना हुए पापों ने आपकी जिन्दगी में अपने अचेत मन में हलचल और हड़बडी मचाई हुई है। अचेत मन में दोष का एहसास बीमारी पैदा करता है। ऐसी बीमारियाँ आपको बेचैन कर देती हैं। डॉक्टर या कोई मनोवैज्ञानिक आपकी मदद नहीं कर पायेंगे।

'मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।' यह कोई चिकना , सुखदायक सूत्र नहीं, जो दूर से ,धार्मिक तौर पर अत्यंत ताजगी देनेवाले शब्द साबित हो। आपको और मुझे इस विश्राम की जरूरत है। वास्तव में, इस मधुर विश्राम और शान्ति के बिना जीना ही व्यर्थ है। तब वह सिर्फ सूना, पीड़ा से भरा , उबाऊ अस्तित्व ही होगा।

'मैं तुम्हे विश्राम दूंगा। ' यह एक वादा है, जो जरूर लगता होगा कि सच साबित होने के लिए इतना अच्छा है कि वह नामुमकिन हो। मगर मानो या ना मानो यह वास्तव में सच है। लाखों ने इस शान्ति और विश्राम को पाया है, जो यीशु आपको देते है। और आपको भी, मेरे प्रिय श्रोता, आपको भी यीशु को चखना होगा। - जोशुआ दानिएल।

बाहर खुले में मैंने अपने परमेश्वर को पाया

सन 1942 एक रविवार का दिन, प्रशान्त महासागर पर एक बमवर्षक विमान मंद गति से डोल रहा था। अमेरिकी वायुसेना कोर , परिवहन कमांड के पाँच आदमी उस पर सवार थे। जल्दी ही वे एक भीषण रोमांच का सामना करने वाले थे। उन में से एक बाद में , अपना किताब 'शायद हमने स्वर्गदूतों को गाते हुए सुना' में उसका वर्णन करते है : 'उस गरम दोपहर,' वह लिखते है , 'किसी आदमी ने शायद ही कभी सामना किया हो ऐसा बहुत बडा रोमांच की तरह मुझे 200 मील प्रति घंटा की रफ्तार से ले जाया जा रहा था। ' उसने पाया कि वह जोखिम कार्य ऐसा था जिसमें एक आदमी अपने परमेश्वर को खोज पाया।

महासागर में:

उस विमान पर सवार पाँच आदमी , बिल चेरी (कमांडर और पायलट), जेम्स ह्विठेकर (सह पायलट और उस आज़माइश का ब्योरा देने वाला लेखक) , जॉन जे.दे एन्जलिस, जेम्स डब्लू. रेनॉलड्स और जॉन बारटेक थे। हवाई राज्य में उनको , पहले विश्व युद्ध के विख्यात योद्धा एड्डी रिकेनबेकर और सैन्य सहायक ऐडमसन को, अमेरिका के युद्ध विभाग के किसी गुप्त विषेशकार्य के लिए उड़ान में ले जाने का विषेश दूत-कार्य सौंपा गया। एक और इंजीनियर एलेक्स जो हाल ही में अस्पताल से छुट्टी पाकर आया था उस दल में शामिल हो गया। संभवत : किसी बिगाड़े हुए यंत्र के कारण, जब उनका नियत लक्ष्य द्वीप चूक गया था , तो एक गंभीर मसला शुरू हुआ। रेनालड्स किसी स्थान से सम्पर्क बनाने में कामयाब हो गया जिससे की उस गुमराह विमान को मदद मिल सकती। मगर वह कुछ 1000 मील की दूरी पर था। इतनी लंबी यात्रा करने के लिए उस विमान में पर्याप्त ईंधन न था। तीन घंटों के बाद, बिल विमान को समुन्दर पर उतारने लगा। उनको पानी पर आपातकालीन उतराई करना होगा।

'क्या आपको परेशानी होगी ,' देएन्जलिस ने पूछा, 'अगर मैं प्रार्थना करू?'

सत्य की परख!

फिर भी मनुष्य का पुत्र जब आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा ? (लूका 18:86)

चेरी उस पर गुर्राया। ह्विठेकर चिड़चिड़ाया; प्रार्थना के बारे में बात करने का क्या यह समय है ! मगर भविष्य में , वह उन ढीठ विचारों को शर्मिन्दगी के साथ कितनी बार याद किया!

'पाँच फुट !' रिकेनबेकर चिल्लाया। 'तीन फुट!' .... 'एक फुट!'

'काट दो!' चेरी चिल्लाया।

विमान में बिजली के सारे कनेक्शनों को बन्द करने के लिए, ह्विठेकर ने मेनलाइन स्विच को बन्द किया। चारों तरफ लहरें उनको लपेट रहीं थीं। उतराई का वह अचानक भारी दबाव और दहशत लगभग अवर्णनीय है। ह्विठेकर ने दोनों में से एक रबड़ का बेड़ा (राफ्ट) पसारने , खोलने की रस्सी को झटकाया। दो औरों ने एक छोटे से बेड़ा को बचाव हैच (विपाट द्वार) में से निकाला। उन आदमियों को तेजी से बाहर निकलना होगा।

बाहर खुले में:

(हाँगर) शार्क मछलियों से भरे उस प्रशांत महासागर के पानी में अब तीन छोटे तरापों (बेडा या राफ्ट) को जल्दी जोड़ा गया। उन में आठ आदमी बैठे थे। उनके पास वायु पंप , चाकू, पिस्तौल, संकेतक धधकनेवाले फ्लेर्स , पतवार, मछली पकडने का जाल और कांटे , रक्षा जैकेट, कुछ अपनी-अपनी व्यक्तिगत चीजें - और चार नारंगी थे। एक नाव में दो आदमी गले लगाकर बैठ थे ताकी वह बाहर ना गिरे , सब से छोटा जो नाव थी उस में एक का पैर दूसरे का कंधे पर

रखकर, दो आदमियों को बैठना पड़ा।

अगले दिन एक एक व्यक्ति को नाशते में नारंगी का एक टुकड़ा मिला। जब जॉनी बारटेक नया नियम पढ़ने बैठा था, तो प्रश्नों की झडी लगाने से ह्विठेकर को किसी चीज ने रोके रखा था।

उस दिन वे आदमी धूप में जल गये; और रात में ठंड क मारे कंपकपी चड़ गई। कमजोर, झुलसे और खासे पानी की बौछ्रें मानो उनकी चमड़ी को डंक मार रहीं हो; भूख और प्यास की यातना बढ़ती गई। किसी जहाज या विमान का कोई नामनो निशान ना था। उनके संकेतक धधकों का उत्तर देने वाला कोई नहीं था।

चौथा दिन एक चोटा सा चमत्कार घटा जब एक अबाबील (पंछी) आकर रिकेनबेकर के सिर पर बैठ गया। तेजी से उसको पकड़ लिया। वह ना केवल मछली पकड़ने का चारा बना था बल्की उनके लिए वह थोड़ा सा खाना भी था। पाँचवा दिन नाश्ता के लिए काफी (मीनिका) छोटी मछलियों को पकड़ पाये। फिर आराम से सानी नावों को प्रार्थना सभा के लिए एक साथ खींचा गया। और सारे आदमियों ने प्रभु की प्रार्थना दोहराई - या उसमें जो कुछ वे जानते थे , दोहराया। ऐडमसन जोर से नया नियम पढ़ रहा था कि अचानक चेरी ने उसे टोक दिया : 'वह क्या है जो आपने आखिर में पढ़ा , कलनल? वह कहाँ से है?'

'वह मत्ती रचित सुसमाचार से है,' जवाब आया , 'क्या आप को वह अच्छा लगा?' 'वह सब से उत्तम चीज है जो मैं ने कभी सुना है। उसे दुबारा पढ़ो , कलनल।'

'इसलिए यह कह कर चिन्ता न करो, 'हम क्या खाएंगे ?' अथवा 'क्या पीएंगे?' या , 'हम क्या पहिनेंगे ?' क्यों कि गैरयहूदी उत्सुकता से इन सब वस्तुओं की खोज में रहते है ; पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएगी। इसलिए कल की चिन्ता न करो , क्यों कि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुख बहुत है।'

ह्विठेकर कुछ हद तक प्रभावित हुआ। मगर उन शब्दों को इस निर्णय के साथ खारिज किया कि जब वह खाना और पानी देखेगा , तभी वह विश्वास करेगा। अगली रात को ही वह कुछ देखने वाला था - 'चौंका देनेवाला प्रमाण'।

छठे दिन , शाम का ठंण्डा समय आया, जब ये आदमी अपना ताकत समेटकर सारे तरापों को एकत्रित करके प्रार्थना साभा का आरंभ करने वाले थे, उस से पहले वह प्रमाण मिला। ह्विठेकर ने अनमने होकर उस प्रार्थना सभा में भाग लिया; उसको यह बात हास्यास्पद लगी कि उनके जैसे प्रयोगात्मक और सख्त , अभावुक आदमी , उस बीरान जल पर उनकी गुनगुने वाली आवाज करने से , उनके लिए मदद के आदेश की अपेक्षा कर रहें है। चेरी न , खाने-पीने के बारे में लिए अपने पसंदीदा अंशा को बाईबल से दुबारा पढ़ा। 'हमेशा कल के बारे में ,' - कडुवाहट के साथ ह्विठेकर ने सोचा , 'यह क्या है , कोई आ-जाओ खेल ?' मत्ती से वह पद पढ़ने के बाद, चेरी का आवाज जारी रही। बहुत आदर के साथ प्रभु को 'हे पुराने मालिक' संबोधित करते , सीधे-सादे और बड़े आग्रह से, अब वह प्रार्थना कर रहा है।

'हे पुराने मालिक, हम जानते है, इसका कोई आश्वासन नहीं कि कल सुबह हमको खाना मिलेगा। मगर जैसे की आप जानते हो, हम भयंकर संकट में है। कम से कम परसों तक थोड़ा कुछ मिल जाने की आशा कर रहे है। हे पुराने मालिक आप ही देखो कि आप हमारे लिए क्या कर सकते हो।' इस तरह वे परमेश्वर से बात करना सीखे थे - साफ साफ सरल। कोई तेरा , आप जैसे गंभीर शब्द नहीं। जब चेरी ने प्रार्थना पूरी की , उन्होंने शाम का वह धंधकने वाला फ्लेर जलाया, इस आशा से कि कुछ खास घटे - अकाल्पनिक कुछ जरूर हुआ।

आकाश में उस प्रकाश देने वाली वस्तु का संचालन शक्ति गलत दिशा में होकर, नीचे गिरने से पहले, ऊपर हवा में उठा। समुन्दर के सतह पर टेढ़ा-मेढ़ा पानी के ऊपर फुस-फुस कर समुद्र के पानी को चकाचौंध किया। शायद उस चौंध से आकर्षित होकर मछली हड़बड़ी में उछलकर उस नाव में आ गिगी। सातवें दिन के नाश्ते के लिए वह काफी था। मगर समुद्र में उतरने के बाद अब तक उन आदमियों ने पानी नहीं पीया था ; उनकी प्यास अब तक बहुत तेज हो गई थी ; और उनका मानसिक संतुलन भी बिगाड़ता जा रहा था।

पानी अब उनके प्रार्थना का मुख्य अंश बना। ह्विठेकर जिसने पहले कभी नहीं ऐसा किया था , अब उस बैठक में अपने पूरे मन के साथ प्रार्थना में शामिल हुआ। शायद वह इसलिए था कि उसकी जरूरत इतना गंभीर थी या फिर बढ़ते विश्वास के कारण कि अकेला काम करता कोई मानवीय साधन ही उनको बचाने में सामर्थ है। चेरी प्रभु को संबोधित करते हुए: 'पुराने मालिक, खाना के लिए हम ने आपको पुकारा और आपने हमें बचाया। अब हम आप से पानी माँगते है। जो कुछ संभव है हम कर चुके है। हमें मदद करने का मन अगर आप जल्द ही नहीं बना लोंगे, तो मुझे लगता है यह खत्म हो जाएगा। लगता है अब अगला कदम आप की इच्छा के ऊपर निर्भर है , हे पुराने मालिक।'

उन आदमियों ने दुबारा प्रभु की प्रार्थना दोहराई। जब की नावें उस समुन्दर पर तैर रहें थीं , ह्विठेकर सोच रहा था कि उनको एक विश्वासी बनाने का अब यह परमेश्वर के लिए एक मौका है।

कुछ समय बाद , ह्विठेकर ने बाये तरफ देखा। एक बादल जो सफेद था अब काला और घना हो रहा है। तब मेघों का एक नीला पर्दा आकाश में छा गया : वर्षा। 'देखो आ गई !' चेरी चिल्लाया , 'धन्यवाद हे पुराने मालिक !' जल्दी ही उनके सूखे-प्यासे मुँह में पानी बरस रहा है। चिड़ चिड़

और झुलसे उनके बदन को धो रहा था। उन आदमियों ने अपने कमीजों को पानी से तर बतर करके पानी को अपने मुँह में निचोड़ा। अपने रक्षा जैकेटों में भी पानी समेट लिया। इस तरह लगातार एक घंटा बारिश हुई।

दसवें दिन चेरी ने बचा-खुचा पानी पीने के लिए दे दिया। उस शाम भी उन्होंने सब लोगों को प्रभु की प्रार्थना करने में अगुवाई की। और हर एक ने भी व्यक्तिगत प्रार्थना की। उन लोगों ने परमेश्वर से वादा भी किया कि अगर वे उनको बचायेंगे, तो नए सिरे से वे अपना जीवन बितायेंगे। सबके सामने उन्होंने अपने पुराने पापों को कबूल किया। ह्विठेकर ने भी संकल्प किया था। बाद में वह अपने भाई से भी सुलह कर लेगा , जिससे वह पंद्रह साल से बात नहीं कर रहा था। देर रात उस ठंडी रात के दौरान , ह्विठेकर, नींद के बगैर, अपनी हालत और अपने आत्मा के बारे में सोचते बैठा रहा। 'आप से अब मैं कह सकता हूँ ,' वह बाद में लिखता, 'भूमद्यरेखीय प्रशांत महासागर पर उन रबड़ के बेडों में , उन झागदार लहरों और हाँगरों के बीच में कोई नास्तिक बनकर नही रह सकता।'

उन वीरान जलों पर मैं अपने परमेश्वर को खोज रहा था और हम अजनबियों की तरह मिल रहे थे - अगर उन्होंने ऐसा ना किया होता तो शायद हम अजनबी ही रह जाते। वह जल्द ही दो और दिव्य चमत्कारों को भेजता कि दो बार और मेरे जीवन को बचाता। और जितना एक जीवन को बदला जा सकता है, पूर्ण रूप से उतना मेरे जिन्दगी के विधान को उन्होंने बदल दिया।

दो चमत्कार:

तेरहवें दिन बारिश का एक नीला पर्दा समुन्दर के उस पार से उन आदमियों की तरफ बढ़ रहा था। उसके उन तक पुहँचने के लिए उन लोगों ने प्रार्थना की। मगर जब की वह एक चौथाई मील की दूरी से भी कम दूर पर था कि हवा ने उसे दूर उड़ा दिया। किसी न किसी तरह ह्विठकर का विश्वास लुप्त नहीं हुआ। वह पहली बार दूसरों को प्रार्थना में अगुवाई करते अपने आपको पाया। परमेश्वर को किस तरह ठीक से संबोधित करे , वह नहीं जानता था। इसलिए परमेश्वर को दोस्त या माता-पिता के जैसा मानकर उससे बात की। 'भगवान', उसने प्रार्थना की , 'वह पानी हमारे लिए क्या मायने रखता है आप जानते हो। मगर हवा उसे उड़ा ले गई। मगर वह आपके सामर्थ्य में है , परमेश्वर, उस बारिश को वापस भेजने के लिए। वह आपके लिए कुछ नहीं, मगर वह हमारे लिए जीवन है। परमेश्वर, हवा आपकी है। आप उसके मालिक हो। उस बारिश को वापस हमारे पास उड़ाने का आदेश दो। जिसके बिना हम मर जायेंगे।'

हवा की दिशा नहीं बदली - मगर फिर भी वह घटता जा रहा बारिश का पर्दा, वही का वही रुक गया। और तब , कैसे भी धीरे धीरे हवा के विपरीत , उन आदमियों की तरफ वापस आना शुरू किया। वो हवा का झोंका मानो किसी राजसी आदेश का पालन कर रहा हो , पीछे हठ गया मानो कोई महान सर्वशक्तिमान का हाथ उसे पाने के उस पार से उसकी अगुआ कर रहें हो।

वे दुबारा पानी इकट्ठा कर पाये और उस ठंडे बाढ़ का अनंद उठा पाये। तब तक उन में से कई तीन-चार बार अपनी त्वया को झाड़ चुके थे और उनके शरीर पर कच्चे धब्बे और घाव थे। आने वाले दिन अब तक से भी बदतर थे। उस चमत्कार होने से पहले ही एलेक्स की मौत हुई। उनके कपड़े फाडकर टुकडे होने लगे। क्लेश , कमजोरी, बेहोशी और चकाचौंध कर देने वाली रोशनी से वे आदमी पीड़ित थे।

अठारह , उन्नीस और बीसवें दिनों, उन आदमियों को मुहतोड़ प्रहारों का सामना करना पड़ा। ह्विठेकर बाद में यह विश्वास करने लगे कि घंटों प्रार्थना में बिताने से पाई सहन-शक्ति ना होती तो वे सब अपनी आशा छोड़ देते। वह निश्चित रूप से मानता था कि परमेश्वर पर जो नया पाया हुआ विश्वास ही है जिसने उनके जीवन को संभाले रखा। अठारह वें दिन शाम को , एक विमान दो बार आया। बीसवें दिन उन नावों को अलग किया गया ताकि उनको देखने की संभावनायें बढ़ जाये।

इक्कीस वां दिन , दूसरा चमत्कार हुआ जब ह्विठेकर ने क्षितिज पर कुछ ताड़ के पेड़ों को देखे। वह समुद्र तट की तरफ अपनी नाव चलाने लगा। 250 गज से भी कम दूरी पर था , मगर वह बेड़ा बेकाबू हो गया। तेज जल धराओं में फंसकर , फिर से समुद्र में वे खींचे गये थे। ह्विठकर ने तेरह वा दिन का उस बारिश का चमत्कार और उनके प्रार्थनाओं का अन्य जवाबों को, और अपने परमेश्वर को याद किया।

उसने शक्ति के लिए पुकारा , अपनी पतवार उठाकर चलाने लगा। ह्विठाकर की तब अन्तिम प्रार्थना यह थी कि, 'हे परमेश्वर ! अब मुझे मत छोड़ना। ' उसके बाहों और कंधों में ताकत बढ़ी ; बेड़ा के चारों तरफ घेरे शार्क मछलियों को मारते हुए वह पतवार चलाने लगा। बेड़ा नियमित रूप से झाग के बीच से तट की ओर बढ़ रहा था तो ह्विटकर के अलावा अन्य और किसी का हाथ उन पतवारे को निर्देशित कर रहे थे। उस जोखिम भरे तल से , हाँगरों के बीच में से , आंधी के विरुद्ध संघर्ष करते वे आगे बढ़ते गये। सन 1942 , 11 नवंबर को ह्विठकर के बेड़े में सवार आदमी , एक छोटे से द्वीप पर पहुँच गये।

सभी सात आदमियों को बचाया गया। ह्विठकर, किस तरह उस महासागर में बिताया उन दहकते दिनों के दौरान , उसने अपने परमेश्वर को पाया। और उन नावों की कहानी बताने वह जीवित रहा था।

- जेम्स ह्विठेकर द्वारा लिखित 'वी थॉट वी